उत्सवों की उमंग

शीत ऋतु का आगमन
अक्टूबर मास का जाता हुआ सावन,
कुछ उत्सवों के आने का बेसब्र इंतज़ार
थोड़ी जगमगाहट, मिठाई और ढेर सारा प्यार।
यही तो है उत्सवों की उमंग
दीवाली के दिए, रंगोली के रंग,
दुर्गा पूजा के जगह-जगह पंडाल
सड़कों पर भीड़, दुकानों का बुरा हाल।
नए चमकीले कपड़े, लाल पीली मिठाई,
हँसी मज़ाक, भाई-बहन की खिंचाई,
घूमने फिरने जाना, मज़े उड़ाना
कभी पुचका, कभी भेल, कभी लड्डू मुँह में दबाना।
दोस्तों के घर आना-जाना
अड्डा करना, गाना बजाना,
ताश खेलना, बाज़ी लगाना
पुराने किस्सों को फिर दोहराना।
यही तो है ज़िंदगी, रौनक से भरपूर
उत्सव पास लाते हैं उनको जो हो गए हैं दूर,
उत्सवों से ही तो जागती है उमंग
जीवन में यही तो भर देते हैं अनगिनत रंग।।

- अनुष्का साहा, 9B

उत्सव की उमंग

वह व्यक्ति बड़ा हताश हुआ बैठा था,
निराशा मुख पर छाई थी।
"हर्ष मनाने का अवसर ही कहाँ मिला,
त्यौहार ही कब आई थी।"

मैं हर्ष से घूमता हूँ, मैं हर्ष से झूमता हूँ,
यह मेरी कहानी है, मैं हर्ष से लिखता हूँ।
मैं खुशियाँ मनाने, उत्सव की प्रतीक्षा क्यों करता फिरूँ,
पुलकित होने, मैं खुद उत्सव बनाता हूँ।

निराशा ही संसार है, निराशा ही यह जग है,
निराशा की ओर ही बढ़ता, मेरा हर पग है।
मुझे नहीं पता कि यह संसार की क्या रीत है,
मुझे ठोकर मारकर पीछे करना, इसकी परं प्रीत है।

जीवन का दुख क्या होता है, ज्ञात नहीं,
यह मनुष्य का जीवन है, कोई और जात नहीं।
मैं यह कैसे मान लूँ, कि तुम दुखी हो,
जब यह तुम्हारे ही हाथ में है, कि तुम सुखी रहो।

कहना सरल है, करना कठिन,
मैं तो इस राह में केवल हूँ एक पथिक।
ज़िन्दगी कोई पारस नहीं है, यह कोई रत्न नहीं है,
यह बोझ केवल काला कोयला है, मुख पर।

कोयला से ही हीरा निकलता है,
केवल उस दृष्टि की आवश्यकता है।
दृष्टिकोण बदलने से तो संसार बदल जाता है,
बस अन्तरमन की आंखों को खोलने की बात है।

तुम खुश हो सकते हो, तुम खुशियाँ बाँट सकते हो,
तुम संतुष्ट हो अपने जीवन से, यह बात तुम समझ लो।
मैं उत्सव की ही राह देखता हूँ उमंगित होने,
क्योंकि उत्सव ही चिंता भूलने की क्षमता देती है,
उत्सव ही संतुष्टि व्यक्त करने का सामर्थ्य देती है।
यहीं है इस बोझ को उठाने वाले की उत्सव की उमंग।

सामर्थ्य तो सबमें है, इस बात की कोई दोहराई नहीं,
मैं खुश हूँ क्योंकि मैं चाहता हूँ, इस बात की कोई गवाही नहीं।
मैं जीत हूँ, उमंगित होता हूँ, क्योंकि मैं हर दिन का उत्सव बनाने की क्षमता रखता हूँ,
मैं खुद को समझ पाता हूँ, दर्पण की छवि को समझ पाता हूँ।
सुख के लिए संतुष्टि नहीं, केवल खुला आसमान चाहिए,
मेरे उड़ने वाले पंख, यहीं मेरे उत्सव की उमंग है।

- रुद्राक्षी दास
कक्षा ११ एफ

Mrittika Das 1D

उत्सवों की उमंग

प्रिय उत्सव,

तू कभी दिवाली के दियो की टिमटिमाती ज्योति बन फड़कती हैं ,
तो कभी दुर्गा पूजा की ढाक बन कानों में गूँजती हैं।
कभी राखी का आकर लेकर भाई के हाथों पर विराजती हैं ,
तो कभी होली पर रंगो की निर्झरणी बन बरसती हैं।
हमारे जीवन की सूखी धरती पर उल्लास और उमंग की वर्षा लाती हैं ,
भूल गए थे हम जो नाते रिश्ते, हमें उनकी याद दिलाती हैं।
तू स्वयं ही एक ऋतू हैं,
जो आती जाती रहती हैं,
साथ तू अपने खुशियों की बौछार लाती हैं।
रोज़-मर्रा के जीवन से तू एक सुहाना अवकाश हैं ,
हमारे जीवन के अँधियारे में तू ही एक प्रकाश हैं।

- श्रद्धा तिवारी

कार्तिक मास में आई दीपावली हो,
या चैत्र में आने वाली होली हो,
घरों को दीपो से सजाया जाए,
या चेहरों पर रंग लगाया जाए।
केरल में मनाई ओणम हो,
या उत्तर प्रदेश की मकर सक्रांति ,
खेतों में फसले लहराती है,
किसानो के चेहरों पर मुस्करान लाती है।
अब वह क्रिसमस में अलंकृत वृक्ष हो ,
या नवरात्री में नृत्य का खेल हो,
आनंद , उत्साह , उमंग तो सभी लाते है ,
बंजर जीवन में हरियाली तो इन्ही से आते है।
-ईशानवी मुरारका,9A

"एकांत"

संध्या होते ही हर घर उज्जवल हो उठा।
ठंडी, शीतल हवा ने दीपावली का आँखें बिछाकर स्वागत किया।
पटाखों की रोशनी, गरमा-गरम मिठाइओं और पकवानों की खुशबू,
घरों में हँसी-ख़ुशी की गूँज;
जब सभ पारिवारिक जीवन के सुखों का आनंद ले रहे थे,
वह चाँदनी-चौक की भीतरी,अँधेरी गलियों में,
अर्ध-रात्रि के एकांत में,
अपनी छोटी-सी बस्ती में शहर की धूम-धाम से परे था।
वह पटाखों से जगमगाते आकाश की ओर देखता,
अन्यमनस्क बन और आकांक्षा से भरपूर।
"दिवाली अब पहले जैसी नहीं रही।"
वह स्वयं से कहता।
पहले दीपावली हर्ष और उल्लास साथ लाती थी।
उसने भी फुलझड़ियाँ जलाईं थीं,
रंगोलियाँ सजाईं थीं,
दीपक जलाए थे,
वात्सल्य रस के सुख मनाए थे।
परंतु अब मानो नकारात्मकता तथा एकाकीपन ने उसे लहरों की तरह घेर लिया था।
क्या दीपावली को परिवार के बिना, दीपावली कहलाया जा सकता है?
केवल एक जलते हुए दीपक की लौ में,
उस अनाथ बच्चे ने अपने अश्रु पोछे,
अपनी आँखें बंद की,
और अपने माता-पिता के साथ बिताई पिछली दीपावली की याद में खो गया।

आस्था बर्मन
कक्षा १०बी

प्रतिबिम्ब

कोई है हिंदू ,
याँ मुसलमान,
है वह बुज़ुर्ग,
या है जवान।
जीवन मैं सबने दिया
चहरे के रंग पर ध्यान,
किसी न देखा,
मन का ज्ञान।
शीशा तो बस दिखाए ,
तन की सुंदरता,
पर बस मनुष्य देख पाए ,
मन के अनोखे भाव।
दूसरों के कपड़े याँ पैसे न देखो,
देखो उनके मन का प्यार।

By- Asaawari Sahai
8C